Topic 97

मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु ।

प्राणिवर्जे मन्यतेः कर्मणि चतुर्थी वा स्यात् तिरस्कारे । न त्वां तृणं मन्ये तृणाय वा । श्यना निर्देशात् तनादिक-योगे न । न त्वां तृणं मन्वे ।

प्राणिवाचक शब्द से वर्जित मन् धातु के कर्म में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से हो तिरस्कार अर्थ में । अतः न त्वां तृणम् — इत्यादि उदाहरण में द्वितीया और चतुर्थी दोनों प्रयुक्त हुई है। मैं तुम्हे तिनका भी नहीं समझता हूँ। यह अनादर की उक्ति है। इसमें कर्म तृण प्राणि भिन्न है। 'मन्यति' यह श्यन्विकरण से युक्त मन् धातु का प्रयोग सूत्र में किया है, अतः तनादिगणपठित मन् धातु के योग में चतुर्थी न होगी। अतएव 'न त्वां तृणं मन्वे' यह द्वितीयान्त प्रयोग ही होगा।

नौकाकान्नशुक शृगालवर्जेष्विति वाच्यम् तेन 'न त्वां नावमन्नं वा मन्ये' इत्यत्र (वा०) अप्राणित्वेऽपि चतुर्थी न । 'न त्वां शुने मन्ये' इत्यत्र प्राणित्वेऽपि भवत्येव ।

'मन्यकर्मणि' इत्यादि सूत्र में पठित अप्राणिषु 'इस पद को हटाकर' नौ, ~~कारक~~ काक, अन्न, शुक, शृगाल को वर्जित कर' ऐसा कहना चाहिए। अतः 'न त्वां नावम् अन्नं वा मन्ये' इस उदाहरण में प्राणिभिन्न कर्म में भी चतुर्थी नहीं होती और 'न त्वां शुने मन्ये' इस प्राणिवाचक कर्म में भी 'शुने' यह चतुर्थी होती है। इसी प्रकार 'न त्वां काकं, शुकं, शृगालं वा मन्ये' — इस उदाहरण में कर्मभूत काक, शुक, शृगाल इन प्राणिवाचक शब्दों में भी द्वितीया जाननी चाहिए।

P.T.O.

गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि ।
अध्वभिन्ने गत्यर्थानां कर्मणि एते स्तश्चेष्टायाम् ।
ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति चेष्टायां किम् ? मनसा हरिं व्रजति । अनध्वनीति किम् ? पन्थानं गच्छति । गन्त्राधिष्ठितेऽध्वन्येवायं निषेधः । यदा तूत्पथात् पन्था एवाक्रमितुमिष्यते तदा चतुर्थी भवत्येव । उत्पथेन पथे गच्छति ॥

गत्यर्थक धातुओं के अध्व भिन्न कर्म में द्वितीया और चतुर्थी दोनों विभक्तियाँ हो चेष्टा अर्थ में। ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति याति एति व्रजति वा। यहाँ गत्यर्थक अनेक धातुओं के प्रयोग में उनके कर्म को द्वितीया और चतुर्थी दोनों का प्रयोग हुआ है।

मनसा हरिं व्रजति (मन से हरि के पास जाता है अर्थात् ध्यान करता है। यह मन में चेष्टा नहीं है, अतः अनुक्त - कर्म में केवल द्वितीया ही होती है। चेष्टा ग्रहण न करने पर तो यहाँ अनिष्ट चतुर्थी भी हो जायगी। अतः चेष्टायां का ग्रहण परमावश्यक है।

ग्रन्थकार का पुनः प्रश्न है कि सूत्र में अनध्वनि - यह ग्रहण क्यों किया ? उत्तर देता है - पन्थानं गच्छति। यहाँ मार्गवाचक पथिन् शब्द से 'पन्थानम्' यह द्वितीया ही होती है। यदि अनध्वनि ग्रहण न करेंगे तो यहाँ भी चतुर्थी हो जायेगी जो इष्ट नहीं। पन्थानं गच्छति के समान अन्य प्रत्युदाहरण भी जानने चाहिए। इत्यतः अध्वानं, मार्गम्, वर्त्म, पदवीं, याति, एति वा - इत्यादि। इनमें द्वितीया ही प्रयुक्त होगी। उपर्युक्त सूत्र के उदाहरणों में मार्गवाचक शब्दों से भिन्न कर्म में (ग्राम, नगर, उद्यान आदि में) द्वितीया और चतुर्थी दोनों प्रयुक्त होंगी, किन्तु मार्गवाचक शब्दों से द्वितीया का प्रयोग होगा यदि अपेक्षित हो। यथा ग्रामं, नगरम्, उद्यानं वा मार्गेण पथा, पद्धत्या वा याति यह अनध्वनि निषेध गन्ता से अधिष्ठित मार्ग में ही होता है।

किन्तु जब उत्पथ से (गलत रास्ते से, ऊबड़-खाबड़ रास्ते से) ठीक मार्ग का ही आक्रमण अभीष्ट हो तब उसमें चतुर्थी हो ही जाती है। यथा - उत्पथेन पथे गच्छति - उत्पथ से ठीक पथ के लिए जाता है। कापथेन, अमार्गेण वा सुपथे, सुमार्गाय वा याति।